

**SUBJECT : SANSKRIT**

**CHAPTER NO: 2**

**CHAPTER NAME: BUDHIRBALABATISADA**

**PPT-1**

---

**CHANGING YOUR TOMORROW**

---

Website: [www.odmegroup.org](http://www.odmegroup.org)  
Email: [info@odmps.org](mailto:info@odmps.org)

Toll Free: **1800 120 2316**  
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

बुद्धिर्बलवती सदा

॥ श्रीः ॥

# शुकसप्ततिः

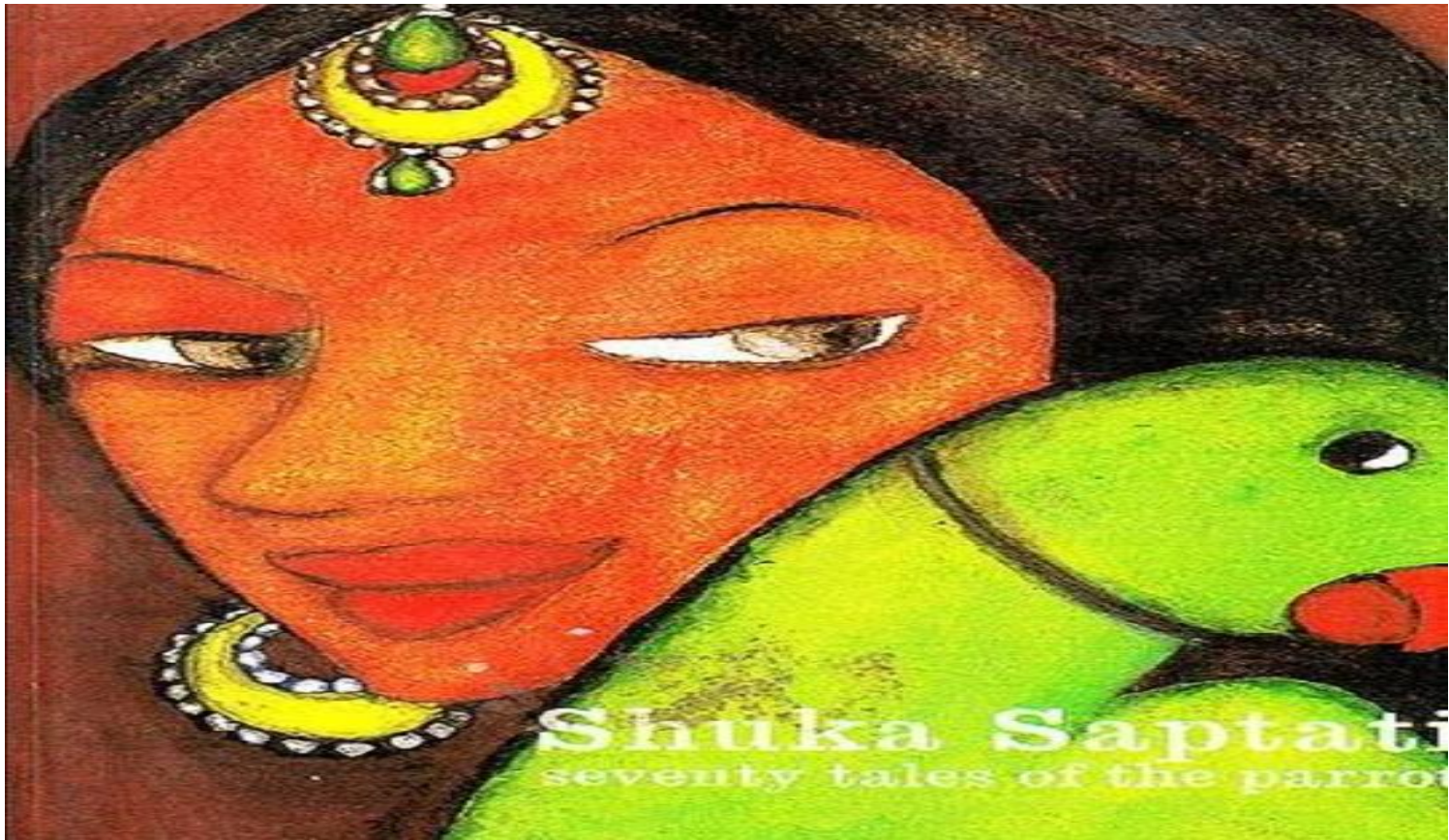
'विनोदिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेता

व्याख्याकार

पं० रमाकान्त त्रिपाठी



श्रीराम्या संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१



## Expected Learning Outcome

सामान्य उद्देश्य : **(General Objective)**

१ . छात्राणाम् नैतिकज्ञानस्य वृद्धिः ।

विशेष उद्देश्य : **(Specific Objective)**

१ .संस्कृतभाषायाम् अभिरुचिः उत्पादनम् ।

२ .श्रवण-भाषण-लेखन-पठनकौशलानां सम्पादनम् ।

३ .छात्राणां शब्दभण्डारस्य विकासः ।

## उपक्रमः

अयं पाठः शुकसप्ततिः प्रसिद्ध कथाग्रन्थात् सम्पादितः । अस्याम् कथायाम् एका नारी पुत्रौ नीत्वा पितुगृहं प्रतिचलित । प्रत्युप्तनमतितया एका नारी व्याघ्रमुखात् स्वपरिवारस्य रक्षां अकरोत् । इयं कथा नीतिनिपुणः शुक तथा सारिकया अप्रत्यक्षं रूपे सद्रवृतेः विकाशः अभवत् ।

अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्ट्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहत्य जगाद—“कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।”

## विपर्ययलेखनम्—

|            |   |              |
|------------|---|--------------|
| पदानि      | — | विपर्ययपदानि |
| आवश्यकम्   | — | अनावश्यकम्   |
| आगच्छन्तम् | — | गच्छन्तम्    |
| धाष्ट्यात् | — | विनयात्      |
| कलहम्      | — | स्नेहम्      |
| भक्षणाय    | — | रक्षणाय      |
| द्वितीयः   | — | अद्वितीयः    |
| पश्चाद्    | — | पूर्वम्      |
| एकदा       | — | बहुवारम्     |



## पर्यायलेखनम्—

|          |   |                   |
|----------|---|-------------------|
| पदानि    | — | पर्यायपदानि       |
| भार्या   | — | पत्नी, दारा       |
| उपेता    | — | युक्ता            |
| दृष्ट्वा | — | अवलोक्य           |
| ददर्श    | — | अपश्यत्/दृष्टवान् |
| चपेटया   | — | करप्रहारेण        |
| प्रहत्य  | — | हत्वा             |
| कलहम्    | — | विवादम्           |
| वनम्     | — | काननम्            |

## समासो विग्रहो वा –

|                |   |                   |
|----------------|---|-------------------|
| पदानि          | - | समास-विग्रहः      |
| आवश्यककार्येण  | - | आवश्यकेन कार्येण  |
| गहनकानने       | - | गहने कानने        |
| राजपुत्रः      | - | राज्ञः पुत्रः     |
| पुत्रद्वयोपेता | - | पुत्रद्वयेन उपेता |

## प्रकृतिप्रत्ययोः विभाजनम्-

| पदानि      | — | प्रकृतिः  | + | प्रत्ययः    |
|------------|---|-----------|---|-------------|
| चलिता      | — | चल्       | + | क्त         |
| आगच्छन्तम् | — | आ         | + | गम् + शतृ   |
| दृष्ट्वा   | — | दृश्      | + | क्त्वा      |
| प्रहत्य    | — | प्र       | + | ह + ल्यप्   |
| विभज्य     | — | वि        | + | भज् + ल्यप् |
| बुद्धिमती  | — | बुद्धिमत् | + | डीप्        |

## सन्धिः विच्छेदो वा—

|                     |  |
|---------------------|--|
| पदानि               | — सन्धि-विच्छेदः                               |
| देउलाख्यो           | — देउल + आख्यो                                 |
| केनापि              | — केन + अपि                                    |
| पुत्रद्वयोपेता      | — पुत्रद्वय + उपेता                            |
| पितुर्गृहम्         | — पितुः + गृहम्                                |
| कथमेकैकशो           | — कथम् + एक + एकशः                             |
| अयमेकस्तावाद्विभज्य | — अयम् + एकः + तावत् + विभज्य                  |
| कश्चिल्लक्ष्यते     | — कः + चित् + लक्ष्यते /<br>कश्चित् + लक्ष्यते |

गृहकर्म :

पञ्चप्रश्नान, पञ्चसन्धिम् चित्वा लिखत ।



# ODM EDUCATIONAL GROUP